3

विदेशों में समाज कार्य का आविर्भाव

* जोशलीन लोबो,

प्रस्तावना

समाज कार्य एक व्यावसायिक विद्या विशेष है, तथा इस समय विभिन्न क्षेत्रों तथा बहुत से देशों में इसका अभ्यास किया जा रहा है। समाजकार्यकर्ता, आजकल, सरकारी, गैरसरकारी, निजी एवं औद्योगिक क्षेत्रों तथा निजी अभ्यासकर्ताओं के रूप में सेवायोजित हैं। यू० के० एवं यू० एस० ए० में व्यवसाय के रूप में विकसित होने के उपरान्त इसका अब विस्तार यूरोप, लैटिन अमरीका, बहुत से एशिया एवं अफरीका के देशों में हो चुका है।

व्यवसाय के रूप में समाज कार्य का उदय बीसवी शताब्दी में हुआ तथा आजकल यह व्यवसाय महाद्वीपों में व्यक्तियों की भलाई एवं जीवन की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी करने के समाज कल्याण प्रादेश (मैनडेट) को पूर्ण करने से सम्बन्धित है। यह अध्ययन का क्षेत्र है जिसने अपने स्वयं के मूल्यों, ज्ञान एवं कुशलताओं के साथ अन्य विद्याविशेषों, विशेषकर प्राणिशास्त्रीय एवं समाज विज्ञानों से अलग परिप्रेक्ष्यों का प्रदर्शन किया है।

समाज कार्य के दार्शनिक एवं ऐतिहासिक आधार तथा समाज कल्याण इस व्यवसाय की रीढ़ की हड्डी है। आधुनिक समय की अभ्यास की प्रवृत्तियों को समाज कार्य व्यवसाय एवं अभ्यास के इतिहास के सन्दर्भ अच्छी तरह से समझा जा सकता है। समाज कार्य सेवाओं को प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के विषय में अभिवृत्तियाँ, विभिन्न समाज कार्य प्रणालियों के विकास तथा प्रशिक्षण एवं शिक्षा की प्रकृति जिसका उदय उन व्यक्तियों के लिए हुआ है जो कि अधिक क्रमबद्ध तरीके से सहायता उपलब्ध कराने में स्वैच्छिक रूप से आगे आते हैं, के अंतर्गत ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य अर्तदृष्टि प्रदान करता है।

ब्रिटेन में समाज कार्य का इतिहास

आदिम समाज, जिसे 'लोक समाज' के नाम से सम्बोधित किया जाता है, में बड़े परिवार अथवा जनजातियों ने उन व्यक्तियों की सहायता की जिनकी आवश्यकतायें सामान्य ढंग से पूर्ण नहीं होती थी। माता–पिता की सहायता से वंचित बच्चों को रिश्तेदारों के घरों में रखा गया अथवा इनको सन्तान रहित युगलों द्वारा गोद लिया गया। कालान्तर में, जब सामन्ती व्यवस्था ने मजदूरी पर आधारित अर्थव्यवस्था की स्थापना का मार्ग प्रशस्त

* जोशलीन लोबो, रोशिनी निलाया, मैंगलोर

किया तो गरीबों द्वारा कार्य करने के लिए बाध्य करने हेतु विधान पारित किए गए। भीख मांगने वालों पर कोड़े बरसाने, जेल भेजने एवं मृत्युदण्ड देने तक से दण्डित किया जाता था।

चर्च की भूमिका

यूरोप में, क्रिश्चियन काल के प्रारम्भिक समय में यह लोक परम्परा जारी रही एवं यह विश्वास किया गया कि समूह के जो सदस्य अपनी देख–भाल स्वयं नहीं कर सकते हैं, उनकी देखभाल करना धार्मिक जिम्मेदारी है। धर्म ने दान के लिए महानतम संप्रेरणा प्रदान की। चर्च, विशेष रूप से मठ, भोजन, चिकित्सकीय सहायता तथा आश्रय देने के केन्द्र बन गए। पादरी के प्रदेश में भीख का संकलन किया जाता था तथा व्यक्तियों एवं उनकी परिस्थितियों से अवगत प्रदेश के पादरी तथा अन्य पादरियों द्वारा इसको बांटा जाता था।

कल्याण का राज्य उत्तरदायित्व के रूप में हो जाना

सहायता के लिए चर्च उत्तरदायित्व से सरकारी उत्तरदायित्व की ओर बदलाव भीख मांगने तथा आवारागर्दी के मना करने के निरोधात्मक विधान में पहली बार देखने को मिला। इंग्लैण्ड में 1350 एवं 1530 के मध्य गरीबों को कार्य करने हेतु बाध्य करने के लिए "श्रमिकों के नियमों" के नाम से विधानों की एक श्रृंखला पारित की गई। चर्च के घटते हुए अधिकार तथा सरकारी अधिकारियों के उत्तरदायित्व देने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति से इंग्लैण्ड में उपायों की एक श्रृंखला का उदय हुआ जो 1601 के प्रसिद्ध इलिज़ावेथन पुअर ला के रूप में सामने आया।

एलिजाबेथन पुअर ला 1601

1601 के पुअर ला पहले के गरीबों हेतु सहायता उपलब्ध कराने के विधान संहिताकरण है। इस अधिनेयम ने सरकारी क्रिया की आवश्यकता वाले राजनैतिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिवर्तनों की तीन पीढ़ियों के बाद इंग्लैण्ड में गरीबों की सहायता हेतु विधान के अन्तिम स्वरूप का प्रतिनिधित्व किया।

इस कानून में गरीबों को तीन वर्गों में बाँटा गया :

1) शारीरिक रूप से सक्षम गरीब जिन्हें 'ह्रस्टपुष्ट' भिखारियों की संज्ञा दी गई। इन्हें सुधारगृहों अथवा कार्यगृहों में कार्य करने के लिए बाध्य किया गया। जो सुधार गृहों में कार्य करने से मना करते थें उन्हें पशुओं के बाड़ों अथवा जेलों में रखा जाता था।

2) अक्षम गरीब जो कार्य करने के योग्य नहीं थे, इनमें बीमार वृद्ध, नेत्रहीन, बधिर–गूंगे, लंगड़े, पागल एवं नवजात शिशुओं वाली माताओं को रखा गया। इन्हें भिक्षा गृहों में रखा गया जो वहाँपर अपनी क्षमताओं की सीमाओं के अनुरूप सहायता करते थे। अगर उनके पास रहने का स्थान उपलब्ध था तो उन्हें खाने, कपड़े एवं ईंधन के रूप में बाहरी सहायता दी जाती थी।

3) आश्रित बच्चे वे बच्चे थे जो कि अनाथ थे तथा इनमें वे बच्चे भी सम्मिलित किए गए जिनके माता–पिता ने उन्हें त्याग दिया था अथवा माता–पिता इतने गरीब थें कि वे उनका लालन–पालन नहीं कर सकते थे। घरेलू अथवा अन्य कार्य करने योग्य आठ वर्ष एवं इससे अधिक आयु के बच्चों को शहर के व्यक्तियों को संविदा पर दिया जाता था।

1601 के पुअर ला ने ग्रेट ब्रिटेन के लिए 300 वर्षों हेतु सरकारी उत्तरदायित्व के अंतर्गत सार्वजनिक सहायता के प्रतिमान को निर्धारित किया। इसने इस सिद्धान्त की स्थापना की कि पादरी के प्रदेश के नाम से जाने वाला स्थानीय समुदाय के अपने निवासियों के लिए गरीबों की सहायता को संगठित करना तथा इसके लिए वित्तीय व्यवस्था करनी थी। गरीबों को देखने वाले पादरी प्रदेश पुअर ला को क्रियान्वित करते थे। उनका यह कार्य था कि वे गरीब व्यक्ति को सहायता उपलब्ध कराने के लिए उससे आवेदन पत्र प्राप्त करें, उसकी दशा के बारे में पता लगावें एवं इस बात का निर्णय करें कि वह सहायता प्राप्त करने के लिए अर्ह है कि नहीं।

एलिजाबेथन पुअर ला का प्रभाव

यद्यपि योरोप में समान प्रकार की कई सुधार योजनाओं की वकालत की गई, परन्तु 1601 के पुअर ला जिसे कभी–कभी 43 एलिजाबेथ भी कहा जाता है, ने सार्वजनिक कल्याण एवं समाज कार्य के विकास को अत्यधिक रूप से प्रभावित किया है। इंग्लिश पुअर ला में ऐसे कई सिद्धान्त है जिन्होंने बाद के चार दशकों के कल्याण सम्बन्धी विधान पर अपना प्रभुत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

1) सहायता के लिए राज्य के उत्तरदायित्व के सिद्धान्त को सार्वभौमिक रूप से अंगीकृत किया गया तथा इस पर कभी भी गम्भीर रूप से प्रश्न नहीं उठाया गया। इसका

तालमेल प्रजातांत्रिक दर्शन तथा चर्च एवं राज्य को अलग करने के सिद्धान्त से रहा है।

2) पुअर ला में कल्याण के लिए स्थानीय उत्तरदायित्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन 1388 से ही है जिसकी संरचना आवारागर्दी को कम करने के लिए की गई थी। इसमें यह व्यवस्था की गई कि 'हस्टपुष्ट भिखारी' अपने जन्म स्थान पर लौटकर सहायता प्राप्त करेंगे।

3) अर्ह गरीब व्यक्तियों के विरूद्ध अनर्ह गरीब व्यक्ति, बच्चे, वृद्ध एवं बीमार जैसी श्रेणियों के अनुसार व्यक्तियों को विभेदीकृत निदान को उपलब्ध कराने को तृतीय सिद्धान्त में रखा गया है। यह सिद्धान्त इस बात पर आधारित है कि कुछ तरह के भाग्यहीन व्यक्ति अन्य प्रकार के व्यक्तियों की तुलना में समुदाय पर अपना अधिक दावा रखते हैं।

4) पुअर ला ने इस बात का भी वर्णन किया कि आश्रितों की सहायता करना परिवार का उत्तरदायित्व है। बच्चे, पौत्र, माता–पिता, पौत्र माता–पिता को वैधानिक दायित्व वाले संबंधी बताया गया।

एलिजाबेथन पुअर ला, पारित होने के समय से ही महत्वपूर्ण एवं प्रगतिशील रहा है। यह इंग्लिश एवं अमरीका दोनों के सार्वजनिक कल्याण का आधार रहा है।

पुअर ला संशोधन : 1834–1909

1834 में संसदीय आयोग ने एजिलाबेथन तथा बाद के एलिजाबेथन पुअर लॉज के संशोधन करने के उद्देश्य से अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस समिति के प्रतिवेदन के आधार पर निम्नलिखित सिद्धान्तों को वर्णित करते हुए विधान का निर्माण किया गया :

क) कम से कम अर्हता का सिद्धान्त

ख) कार्यगृह परीक्षण का पुर्नस्थापन

ग) नियन्त्रण का केन्द्रीकरण

कम से कम अर्हता के सिद्धान्त का अर्थ था कि कंगालों की दशा किसी स्थिति में इतनी अर्ह नहीं होनी चाहिए जितनी निचले वर्ग की दशा जो कि अपने उद्यम द्वारा अपना जीवनयापन करते हैं। अन्य शब्दों में, सहायता प्राप्त करने वाला कोई भी व्यक्ति धनी नहीं होना चाहिए। द्वितीय सिद्धान्त के अनुसार, शारीरिक रूप से सक्षम व्यक्ति सार्वजनिक

कार्यगृहों में सहायता के लिए आवेदन दे सकते थे, परन्तु कार्यगृहों में रहने तथा इनके किराये को स्वीकृत करने से मना करने के कारण किसी भी सहायता को प्राप्त करने के लिए उन्हें रोक दिया गया। बाहरी सहायता को पूर्ण रूपेण न्यूनतम कर दिया गया। तृतीय सिद्धान्त के आधार पर, तीन पुअर ला आयुक्तों को केन्द्रीय प्राधिकरण को यह अधिकार दिया गया कि वे पूरे देश में पुअर ला सेवाओं को एकत्रित कर एवं इन्हें समन्वित करें। पादरी के प्रदेशों को अब प्रशासकीय इकाइयों के रूप में नहीं रखा गया।

1834 एवं 1909 के मध्य पुअर ला विधान में अनेक परिवर्तन किए गए जिसका संयुक्त प्रभाव यह पड़ा कि पूर्णव्यवस्था 1834 के सिद्धान्तों से दूर हट गई। कुछ सुविधा वंचित समूहों की विशेषीकृत देखभाल को विकसित करने की शुरूआत महत्वपूर्ण परिवर्तनों में एक परिवर्तन था। उदाहरणार्थ, आश्रित बच्चों के लिए जिला विद्यालयों एवं पोषण ग हों की सेवायें उपलब्ध करायी गयी तथा पागल एवं कम दिमाग वालों के लिए विशेषीकृत संस्थाओं को प्रारम्भ किया गया।

1909 पुअर ला प्रतिवेदन में पुअर लाज़ के प्रति अधिक सकारात्मक अभिगम को देखा जा सकता है। इस प्रतिवेदन में दबाव की अपेक्षा निरोगात्मक निदान एवं पुर्नवासन पर बल दिया गया तथा कुछ चयनित कार्यगृह परीक्षण के स्थान पर सभी के लिए प्रावधान किया गया। 1834 के सिद्धान्तों ने यदि 'दबाव के ढाँचों' का प्रतिस्थापन करते थे तो 1909 के सिद्धान्तों ने 'निरोध के ढाँचे' का प्रतिस्थापन किया।

बेवरिज़ प्रतिवेदन

1942 में सामाजिक बीमा तथा संबंधित सेवाओं पर अन्तर्विभागीय समिति के अध्यक्ष सर विलियम बेवरिज़ ने समिति का प्रतिवेदन सरकार को प्रस्तुत किया। इस प्रतिवेदन में चार सिद्धान्तों पर बल दिया गया :

1) प्रत्येक नागरिक को आच्छादित किया जाना।

2) बीमारी, बेरोजगारी, दुर्घटना, वृद्धावस्था, वैधव्य, मात त्व इत्यादि, जैसी मुख्य बातें जोकि कमाने वाली शक्ति में ह्रास करती हैं, को एक ही प्रकार के बीमा में सम्मिलित किया गया।

3) योगदान देने वाले की आय के बावजूद एक निश्चित दर पर योगदान का भुगतान किया जाए।

4) आय की मात्रा के बावजूद जो व्यक्ति लाभ लेने के अर्ह हैं उन्हें एक निश्चित दर पर अधिकार के रूप में लाभ का भुगतान किया जाए।

बेवरिज ने इस बात पर बल दिया कि उनकी योजना के अंतर्गत सामाजिक दर्शन ब्रिटिश नागरिकों को आवश्यकता एवं अन्य सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संरक्षण उपलब्ध कराना है। प्रत्येक व्यक्ति लाभों के अर्ह हैं जिसमें मात त्व, बीमारी, बेरोजगारी, औद्योगिक चोट, सेवानिवृत्ति एवं विधवाओं को सहायता देना सम्मिलित है। पारिवारिक भत्ते, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवायें एवं राष्ट्रीय सहायता इससे संबंधित सेवायें है।

इंग्लिश पुअर ला इतिहास– 1601,1837, 1909 एवं 1942 में 1942 का बेवरिज प्रतिवेदन एक बहुत ही प्रतिष्ठित अभिलेख है। यह प्रतिवेदन यू0 के0 के लिए आधुनिक समाज कल्याण का आधार बन गया।

परोपकार संगठन समाज (चैरिटी आर्गनाइजेशन सोसाइटी–कास) आन्दोलन तथा सेटेलमेण्ट हाउस आन्दोलन का प्रारम्भ

इंग्लैण्ड में, लन्दन के अन्तर्गत कई वर्षों में समाज सेवाओं के मध्य प्रतिस्पर्द्धा एवं परस्परव्यापी होने की समस्या के कारण सार्वजनिक रूप से जागरूक नागरिकों के एक समूह ने 1869 में लन्दन चैरिटी आर्गनाइजेशन सोसाइटी (कास) का गठन किया जिसके संस्थापक आक्टिवहिल एवं सैम्युअल बारनेट नामक दो व्यक्ति थे। अपने आवासीय सुधारक के रूप में आक्टिवाहिल द्वारा मलिन बस्ती की आवासीय स्थिति को सुधारने के ढंग के रूप में "मित्रतापूर्वक किराया संग्रहीत करने" की व्यवस्था को लागू किया गया।

साप्ताहिक बैठकों के माध्यम से आक्टिवाहिल ने स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को अपनी क्रियाएं सम्पन्न करने के संबंध में अनुगमन करने के उद्देश्य से कुछ सिद्धान्त एवं कानून बताये एवं "कार्यकर्ताओं के अनुगमन हेतु कुछ अक्षर/पत्र" दिए। उसने इस बात पर बल दिया कि 'प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक स्थिति वैयक्तीकृत है'। प्रत्येक का इलाज उसकी एकातंता एवं स्वतन्त्रता के परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए। उसने अपने कार्यकर्ताओं को यह सलाह दी कि किरायेदारों के विषय में उन्हें निर्णय उनके व्यक्तिगत मानकों पर नहीं लेना चाहिए। वह अपने सबसे अधिक निम्नस्तरीय किरायेदार के भी सम्मान के मूल्य में विश्वास रखती थी।

सैम्युल अगस्तस बारनेट प्रथम सेटेलमेण्ट हाउस टोयन्बी हाल के संस्थापक थे, जिसमें ह्वाइट चैपल की मलिन बस्तियों में रहने की दशाओं में सुधार हेतु एक प्रयास करने के लिए धनी आक्सफोर्ड के विद्यार्थियों ने निवास किया। इसका मूल विचार था कि आपसी लाभ के लिए शिक्षित व्यक्तियों को गरीब व्यक्तियों के सम्पर्क में लाया जाए। क्रिश्चियन समाजवादियों ने भी यह महसूस किया कि केवल दान के वितरण से ही समस्याओं का हल नहीं हो सकता है। गरीबी एवं अर्द्ध विकास की स्थिति को अच्छी तरह से समझने के लिए गरीब व्यक्तियों के साथ रहना एवं उनकी समस्याओं को सुनना आवश्यक है।

इंग्लैण्ड में शुरूआत को रेखांकित करने के पश्चात् अब हम संयुक्त राज्य अमरीका में समाजकार्य व्यवसाय की अभिवृद्धि एवं विस्तार को देखेंगे।

अमरीका में समाज कार्य का इतिहास

इंग्लिश पुअर ला एवं इससे संबंधित किए गए कार्यों ने सहायता देने की अमरीकी व्यवस्था को विकसित करने हेतु पृष्ठभूमि तैयार की। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य एवं इसके पहले इंग्लैण्ड की बस्तियों से आने वाले व्यक्ति अपने साथ अंग्रेजी विधान, प्रथाएं, संस्थाएं, एवं विचार लाए और उन्हें अमरीका में प्रतिस्थापित किया।

तीन सामाजिक आन्दोलन

गत उन्नीसवीं शताब्दी की आधी अवधि के दौरान, संयुक्त राज्य अमरीका ने औद्योगीकरण, शहरीकरण एवं प्रव्रजन की तीव्रगति तथा जनसंख्या की अत्यधिक अभिवृद्धि के कारण सामाजिक समस्याओं में वृद्धि होना महसूस किया। इन समस्याओं के प्रत्युत्तर में, तीन सामाजिक आन्दोलनों की शुरूआत की गई जोकि समाज कार्य व्यवसाय को विकसित करने के लिए आधार बनें।

1) परोपकार संगठन समितियों (चैरिटी आर्गनाइजेशन सोसाइटीज़) का आन्दोलन जिसका प्रारम्भ न्यूयार्क के बफैलों में 1877 में हुआ।

2) सेटेलमण्ट हाउस आन्दोलन जिसका प्रारम्भ न्यूयार्क में 1886 में हुआ।

3) बाल कल्याण आन्दोलन, जोकि ढीले तरीके से किए गए अनेक कार्यों का परिणाम था। इन कार्यों में विशेषरूप से न्यूयार्क शहर में 1853 की चिल्ड्रेन ऐड सोसाइटी एवं 1875 की सोसाइटी फॉर दि प्रिवेन्शन ऑफ क्रुअल्टी टु चिल्ड्रेन का उल्लेख किया जा सकता है।

अब इन आन्दोलनों की अधिक विस्तार में चर्चा की जाएगी क्योंकि भविष्य के कार्यों का ये ही आन्दोलन आधार बनते हैं।

परोपकार संगठन समिति (चैरिटी आर्गनाइजेशन सोसाइटी) आन्दोलन

सेटेलमेण्ट हाउस आन्दोलन तथा बाल कल्याण आन्दोलन ने समाज कार्य व्यवसाय को विकसित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिए, परन्तु इस व्यवसाय के उद्गम को परोपकार संगठन समिति (चैरिटी आर्गलनाइजेशन सोसाइटी) आन्दोलन में पाया गया। एक इंग्लिश पादरी एस0 हम्फ्रीज गुरटीन द्वारा लन्दन के परोपकार संगठन से प्रभावित होकर

1877 में संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क के बफैलो में पहली दान संगठन समिति का गठन किया गया। बफैलो की इस परोपकार संगठन समिति ने इसी तरह के संगठनों को विकसित करने के आदर्श के रूप में कार्य किया। इसके परिणाम स्वरूप, 15 वर्षों के अंतर्गत 92 अमरीकी शहरों में परोपकार संगठन समिति संस्थाओं का गठन हुआ।

मानव आवश्यकताओं की समस्याओं के प्रति व्यावसायिक दृष्टिकोण की शुरूआत को परोपकार संगठन समिति आन्दोलन में देखा जा सकता है। परोपकार संगठन समिति द्वारा अंगीकृत "वैज्ञानिक परोपकार" प्रवृत्ति ने उन्हें इस योग्य बनाया कि वे गरीबों को केवल सहायता ही उपलब्ध न कराकर बल्कि गरीबी एवं पारिवारिक विघटन को समझें एवं इनका इलाज करें। परोपकार संगठन समाज कल्याण पर विज्ञान उसी प्रकार से लागू करना चाहते थे जिस प्रकार से चिकित्सा एवं अभियंत्रण पर इसे लागू किया गया।

परोपकार संगठन समिति के नेताओं द्वारा यह प्रयास किया गया कि अस्त व्यस्त दान को जाँच, समन्वय एवं व्यक्तिगत सेवा पर बल देने वाली विवेकपूर्ण व्यवस्था के रूप में बदला जाए। प्रत्येक केस के बारे में व्यक्तिगत रूप से विचार करना था, इसकी गहराई से जाँच की जानी थी तथा इसे 'मित्र अभ्यागत' को दे देना था। मित्र अभ्यागतों द्वारा वैयक्तिक गुणों जैसे सहानुभूति, निपुणता, धैर्य तथा बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह से युक्त प्रविधियों का प्रयोग किया जाता था। परोपकार संगठन समिति के 'मित्र अभ्यागत' जिसमें अधिकतर महिलाएँ थी, आजकल के समाजकार्य कर्ताओं के यथार्थ रूप में अग्रगामी हैं।

इसके अतिरिक्त, परोपकार संगठन समिति आन्दोलन द्वारा आज की परिवार सेवा संस्थाओं, परिवार वैयक्तिक सेवा कार्य के अभ्यास, परिवार सलाह, समाज के विद्यालयों, सेवायोजन सेवाओं, विधिक सहायता एवं अन्य अनेक कार्यक्रमों जोकि आज के समाज कार्य के अभिन्न अंग है, के विकास को पोषित किया गया।

इसके अतिरिक्त, इन योगदानों में 'चैरिटीज रिव्यू' नामक प्रथम समाजकार्य प्रकाशन को सूचीबद्ध किया जा सकता है। इसको 1907 में 'सर्वे' में मिला दिया गया तथा इस प्रकाशन को 1852 तक चलाया गया।

सेटलमेण्ट हाउस आन्दोलन

अमरीका की समाज सेवाओं के अन्तर्गत दूसरा महत्वपूर्ण विकास सेटेलमेण्ट हाउस का था। अठारह सौ के आखिर में संयुक्त राज्य अमरीका में सेटेलमेण्ट हाउसेज को स्थापित करने की शुरूआत की गई तथा इग्लैण्ड में सैम्युअल वारनेट द्वारा 1884 में स्थापित टयान्वी हाल की स्थापना के उपरान्त ये आदर्श रूप मे सामने आए। देश के कई शहरों में अनेक

की स्थापना के उपरान्त ये आदर्श रूप में सामने आए। देश के कई शहरों में अनेक सेटेलमेण्ट हाउस स्थापित किए गए जिनमें 1889 में जेन एडम्स एवं एलेन गेट्स स्टार द्वारा प्रारम्भ किया गया चिकागो हल हाउस सम्मिलित है।

सामाजिक वकालत एवं सामाज सेवाओं से युक्त सेटेलमेण्ट हाउस आन्दोलन अत्यधिक औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं प्रव्रजन के परिणाम स्वरूप होने वाले सामाजिक विघटन के प्रत्युत्तर में था। समूह कार्य एवं पड़ोस को संगठित करने की रणनीतियों द्वारा सेटेलमेण्ट हाउस कार्यकर्ताओं द्वारा पड़ोसी केन्द्रों को स्थापित किया गया तथा दिवा संरक्षण जैसी सेवाएँ उपलब्ध करायी गयीं।

सेटेलमेण्ट हाउस कार्यकर्ता धनी परिवारों के युवा एवं आदर्शों से युक्त महाविद्यालयों के स्नातक थे जो गरीबों के मध्य रहते थे। इस प्रकार से ये कठोर वास्तविकताओं को महसूस करते थे। अधिकांशतः, ये स्वैच्छिक कार्यकर्ता एवं सामुदायिक नेता थे तथा समाज कार्य व्यावसायिकों के रूप में सेवायोजित नहीं थे।

सेटेलमेण्ट हाउस के नेताओं का यह विश्वास था कि पड़ोस को परिवर्तित करके वे समुदाय की दशाओं में सुधार ला सकते हैं तथा समुदायों में परिवर्तन लाकर अच्छे समाज को विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार से समूह कार्य, सामाजिक क्रिया एवं सामुदायिक संगठन नामक समाजकार्य ढंगों के बीज सेटेलमेण्ट हाउस आन्दोलन में बोये गए।

बाल कल्याण आन्दोलन

न्यूयार्क शहर में प्रारम्भ की गई चिल्ड्रेन्स ऐड सोसाइटी (1853) तथा सोसाइटी फॉर दि प्रिवेन्शन ऑफ क्रुअल्टी टु चिल्ड्रेन (1875) ने बाल कल्याण आन्दोलन के मूलभूत तत्व के रूप में थी। परन्तु, बाल कल्याण आन्दोलन की शुरूआत को 1729 से देखा जा सकता है जबकि भारतीयों द्वारा मारे गये माता–पिताओं के बच्चों के लिए न्यू ओरलीन्स में उर्सलीन बहनों द्वारा एक संस्था की स्थापना की।

बाल कल्याण संस्थायें सीमित उद्देश्य रखती हैं। ये मूलभूत रूप से अनौचित्यपूर्ण घरों अथवा गलियों से बच्चों को लाने तथा उन्हें अपना जीवन बिताने के लिए पूरी सुविधायें उपलब्ध कराने से संबंधित होती हैं। एक बार जब उनके लक्ष्यों की पूर्ति हो जाती है तो ये संस्थायें यह समझती है कि उनका कार्य पूर्ण हो गया है।

समाज कार्य प्रणालियों का विकास

आधुनिक समाज कार्य जिन अनेक मूलभूत सिद्धान्तों तथा ढंगों पर आधारित है, वे अधिकतर उपरिलिखित समितियों एवं आन्दोलनों की प्रत्यक्ष शाखाएं हैं। केस अभिलेखों को सावधानी पूर्वक रखना, एक व्यक्ति के रूप में सेवार्थी का आदर करना, समस्याओं के प्रति पुनर्वास अभिगम रखना, व्यवहार की सीधे निन्दा न करने के स्थान पर कारणों का विश्लेषण करना– ऐसे सभी मूलभूत सिद्धान्त हैं जिनके अंतर्गत दान संगठन समितियाँ कार्य करती रहीं है।

आगे की इकाइयों में वैयक्तिक सेवा कार्य, सामूहिक सेवाकार्य एवं सामुदायिक संगठन नामक समाजकार्य ढंगों का वर्णन किया जाएगा। फिर भी, इनके विकास का संक्षिप्त रूपरेखा निम्नलिखित है:

सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य

समाज कार्य ढंगों में सामाजिक वैयक्तिक सेवाकार्य पहला ढंग है तथा सब ढंगों की अपेक्षा इस ढंग का अध्ययन बहुत अधिक किय गया है।

इस ढंग का विकस अधिकतर स्वैच्छिक संस्थाओं में हुआ जिनकी स्थापना दान संगठन समिति आन्दोलन के प्रारम्भ के पश्चात् हुई थी। सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य इन संस्थाओं में कार्यरत कार्यकर्ताओं के संचयित एवं सूचीबद्ध अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है।

मेरी रिचमण्ड द्वारा सर्वप्रथम 'सोशल डाइग्नोसिस' (1917) तथा 'ह्वाट इज सोशल केश वर्क ?' (1922) में सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य अथवा व्यक्तियों के साथ समाजकार्य के नियमों, सिद्धान्तों एवं ढंगों की पहचान् की गई। रिचमण्ड के अनुसार सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य चार प्रक्रियाओं से युक्त होता है; व्यक्ति के अंतर्गत अर्न्तदृष्टि, सामाजिक वातावरण में अर्न्तदृष्टि, मस्तिष्क के मस्तिष्क से संबंधित प्रत्यक्ष क्रिया तथा सामाजिक वातावरण के द्वारा अप्रत्यक्ष क्रिया। (लूबो : 1965)

रोगी के रहने की दशाओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से 1905 में चिकित्सीय समाजकार्य की स्थापना डा0 रिचर्ड सी0 केबट के प्रयोजकत्व में मैसाचुसेट्स सामान्य अस्पताल में की गई।

इसके बाद के वर्षों में, कम गम्भीर समस्याओं से युक्त व्यक्तियों की समस्याओं से निपटने हेतु सामाजिक संस्थाओं द्वारा फ्रायडवादी अवधारणाओं को धीरे–धीरे अंगीकृत किया गया। समाज कार्यकर्ताओं ने मनोवैज्ञानिक शोधों से प्राप्त अर्न्तदृष्टियों को उन्मुक्त रूप से स्वीकार किया। ये सभी अवधारणाओं जैसे कि मानव व्यवहार के अचेतन कारकों का महत्व प्रारम्भिक जीवन के निर्माण के वर्षों का बाद के जीवन के लिए प्रामाणिक महत्व, द्वैधवृत्ति (एक ही समय में दो विरोधी संवेगों की भावना) के परिणाम वैयक्तिक सेवा कार्य के लिए अधिक कार्यात्मक एवं लाभकारी सिद्ध हुई। नवीन रूप से विकसित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों एवं बुद्धिलब्धि के व्यापक प्रयोग ने मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में समाज कार्य की अभिरुचि को पुर्नस्थापित किया।

समूह कार्य एवं सामुदायिक संगठन

सामाजिक सामूहिक कार्य एवं सामुदायिक संगठन के विधि तन्त्रों को 1940 एवं 1950 के दशकों में हस्तक्षेपों के रूप में औपचारिक स्वीकृति एवं पहचान मिली। समूह कार्य जो कि सामाजिक परिवर्तन के लिए एक साधन के रूप में छोटे समूह की अंतःक्रिया का उपयोग करता है तथा सामुदायिक संगठन जोकि बड़े समूहों एवं संगठनात्मक इकाइयों में परिवर्तन करने पर बल देने से संबंधित है, दोनों व्यवहार परिवर्तन के स्थिति संबंधी सन्दर्भ पर बल देते हैं।

स्वैच्छिक मनोरंजनात्मक संस्थाओं तथा सेटेलमेण्ट हाउसेज ने व्यावसायिक समूह कार्य के विकास का प्रारम्भ किया। अमरीका की सामुदायिक चेस्ट्स एवं परिषद्, अब अमरीका की संयुक्त सामुदायिक कोष एवं परिषदें, 1918 में स्थापित की गई जिन्हें अब सामुदायिक संगठन के नाम से जाना जाता है।

समूह कार्य एवं सामुदायिक संगठन को स्वीकृत समाजकार्य ढंगों में सम्मिलित करने से समाजकार्य व्यवसाय का महत्वपूर्ण रूपान्तर हुआ है। पूर्व में समाजकार्य को वैयक्तिक कार्य के पर्याय के रूप में लिया जाता था। समाज कार्य की आवश्यकताओं की कुशलतायुक्त प्रत्युत्तर देने के रूप में दृढ़तापूर्वक स्थापित हुआ।

सामान्य प्रतिरूप (माडल)

समाज कार्य अभ्यास का निर्माण करने वाले वैयक्तिक कार्य, समूह कार्य एवं सामुदायिक संगठन के तीनों ढंगों को एकीकृत करने की व्यावसायिक इच्छा ने समाज कार्य अभ्यास के सामान्य आधार को विकसित करने की दिशा में प्रयास किए गए। हालिस–टेलर प्रतिवेदन (1951) के प्रकाशन के उपरान्त बहु–ढंगीय अभिगम अथवा संयुक्त अभ्यास को लोकप्रिय बनाया गया।

1970 एवं 1980 के दशकों में अभ्यास की सामान्य अवधारणा की पहचान की गई एवं स्वीकृति दी गई। समाज कार्य अभ्यास की तीन ढंगों वाली अवधारणा को एकीकृत कर सामान्य ढांचे में परिवर्तित करने हेतु अनेक प्रतिरूपों (माडलों) को निर्मित किया गया।

व्यावसायिक स्थिति की खोज़

1890 के दशक तक परोपकार संगठन समिति के कार्मिकों में इस बात की आवश्यकता महसूस की गई तथा उनमें यह महती इच्छा जागृत हुई कि समाज कार्य को एक व्यावसायिक स्थिति प्रदान की जाए। इस व्यावसायिकता के प्रति इच्छा जाग त होने के लिए कई कारण उत्तरदायी थे :

1) प्रथम, उस समय के दौरान व्यावसायिकता के प्रति मुख्य झुकाव था। चिकित्सा एवं अभियन्त्रण ने आश्चर्यों का प्रदर्शन किया। यह तभी संभव हो पाया जबकि एक व्यवसाय के माध्यम से व्यावहारिक समस्याओं के समाधान हेतु विज्ञान का प्रयोग किया गया।

2) द्वितीय, परोपकार संगठन समिति के अधिकांश कार्यकर्ता वैयक्तिक कार्यकर्ता थे जिन्हें अपने जीवन यापन हेतु धन अर्जन की आवश्यकता थी तथा वे अपने कार्य को एक वांछित कार्य एवं अच्छी मजदूरी देने वाले कार्य के रूप में स्थापित करना चाहते थे।

3) तृतीय, महिलाओं का एक नया वर्ग, जो शिक्षित तथा घर के बाहर अपनी जीवन वृत्ति, चलाना चाहता था, का उदय हुआ। परोपकार को एक पूर्ण व्यवसाय में विकसित करने में उनके लिंग के कारण उन पर रोक न लगायी जाए, एक बेहतर रणनीति थी।

4) चतुर्थ, भुगतान प्राप्त करने वाले परोपकार कार्यकर्ता तथा स्वैच्छिक कार्यकर्ता उनके द्वारा किए जा रहे कार्य में अत्यन्त जटिलता महसूस कर रहे थे। व्यक्तियों को परिवारिक टूटन एवं गरीबी जैसी समस्याओं में सहायता करना एक जटिल कार्य था जैसे कि चिकित्सकों एवं अधिवक्ताओं का कार्य होता है। इसलिए इनको किसी प्रकार की व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं शिक्षा की आवश्यकता महसूस की गई।

इन उपरिलिखित कारणों के कारण 1890 के दशक तक परोपकार करने वाले व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्रों की स्थापना करने के शक्तिशाली आन्दोलन का विकास हुआ।

व्यावसायिक स्थिति पर फ्लेक्सनर के विचार

यह प्रश्न कि समाज कार्य वास्तव में एक व्यवसाय है, समाज कार्यकर्ताओं को करीब एक शताब्दी से चुनौती बना हुआ है। समाजकार्य की व्यावसायिक स्थिति का मूल्यांकन 1915 में अब्राहम फ्लेक्सनर ने किया था एवं उनका निष्कर्ष तभी से समाज कार्यकर्ताओं के मध्य गूंजता रहा है।

दान एवं सुधार (चैरिटीज एवं करेशन) पर बाल्टीमोर सभा की 1915 में हुई बैठक में फ्लेक्सनर द्वारा 'क्या समाज कार्य एक व्यवसाय है?" विषय पर दिया गया भाषण एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। फ्लेक्सनर जोकि व्यावसायिक शिक्षा के एक उल्लेखनीय विशेषज्ञ थे, ने छह गुणों का उल्लेख किया जिन्हें उन्होंने 'एक व्यवसाय की पहचान करने के अंग' की संज्ञा दी। फ्लेक्सनर के अनुसार–

"व्यवसाय बड़ी मात्रा में वैयक्तिक उत्तरदायित्व के साथ बौद्धिक क्रियाओं से आवश्यक रूप से सम्बद्ध होते हैं, विज्ञान एवं सीखने से कच्ची सामग्री पाते हैं, इस सामग्री का वे व्यावहारिक एवं निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कार्य में लाते हैं, एक शैक्षणिक संक्रामक प्रविधि को रखते हैं, स्वयं को संगठित करते हैं एवं संप्रेरणा में बढ़ते हुए परोपकारी बनते हैं।"

1915 में फ्लेक्सनर ने निष्कर्ष निकाला कि समाज कार्य निम्नलिखित कारणों से अभी तक व्यवसाय नहीं था :

1) क्योंकि समाजकार्य ने अन्य व्यवसायों के मध्य मध्यस्थता की इसके पास एक सही माने में व्यवसाय की शक्ति का उत्तरदायित्व नहीं था।

2) जबकि समाज कार्य अपने ज्ञान का समूह, तथ्यों एवं विचारों को प्रयोगशाला एवं संगोष्ठियों दोनों से प्राप्त करता है, फिर भी यह उद्देश्यपूर्ण संगठित शैक्षणिक विद्या विशेष पर आधारित नहीं था।

3) यह एक व्यवसाय के लिए आवश्यक विशेषीकृत क्षमता की उच्च मात्रा से युक्त नहीं था, क्योंकि उस समय समाज कार्य अभ्यास का वृहद् क्षेत्र था।

फ्लेक्सनर ने फिर भी 'व्यावसायिक स्वयं चेतना' के तीव्र विकास को स्वीकार किया, इस बात को माना कि समाज कार्य व्यावसायीकरण की प्रारम्भिक अवस्थाओं में था एवं समाज कार्यकर्ताओं की परोपकारी सम्प्रेरणा को तथा अच्छा कार्य करने के प्रति समर्पण की भावना को सराहा।

जिस समय से फ्लेक्सनर ने समाज कार्य की अव्यावसायिक स्थिति की घोषणा की, तभी से इसकी व्यावसायिक स्थिति के लिए व्यग्रतापूर्ण चाह रही है। इसके पश्चात् हड़बड़ाहट की क्रिया में समाज कार्य के विद्यालयों में वृद्धि, व्यावसायिक प्रमाण पत्र देने वाले निकाय का गठन, शैक्षणिक पाठ्यक्रम को मानकीकृत करना, सभी समाज कार्य कर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु वकालत करना तथा किसी भी क्षेत्र में लागू समाज कार्य कुशलताओं की एकात्मक, सामान्य प्रकृति का परीक्षण करने हेतु श्रृंखलाबद्ध सभायें करना सम्मिलित है।

ग्रीनवुड का प्रतिरूप (माडल)

अरनेस्ट ग्रीनवुड (1957) का "अटरीब्यूट्स ऑफ ए प्रोफेशन" विषय पर अत्युत्तम लेख समाज कार्य की व्यावसायिक स्थिति के मूल्यांकन में एक दूसरे सीमा चिन्ह के रूप में है। ग्रीनवुड ने एक व्यवसाय के निम्नलिखित सूचकों का वर्णन किया है :

1) एक व्यवसाय मौलिक ज्ञान से युक्त होता है तथा सिद्धान्त के क्रमबद्ध निकाय को विकसित करता है जोकि अभ्यास की कुशलताओं को निर्देशित करता है। शैक्षणिक तैयारी बौद्धिक होने के साथ–साथ अभ्यास परक भी होती है।

2) व्यावसायिक प्राधिकरण तथा सेवार्थी व्यावसायिक संबंध में विश्वसनीयता व्यावसायिक निर्णय तथा सक्षमता के प्रयोग पर आधारित रहते हैं।

3) एक व्यवसाय अपनी सदस्यता, व्यावसायिक अभ्यास, शिक्षा एवं निष्पत्ति मानकों को नियमित एवं नियन्त्रित करने की शक्ति से युक्त होता है। समुदाय नियामक शक्तियों तथा व्यावसायिक सुविधा का अनुमोदन करती है।

4) एक व्यवसाय लागू करने योग्य, स्पष्ट, क्रमबद्ध एवं बांधने वाली नियामक आचार संहिता से युक्त होता है। यह आचार संहिता व्यवसाय के सदस्यों को नीतिगत व्यवहार प्रदर्शित करने हेतु बाध्य करती है।

5) एक व्यवसाय औपचारिक एवं अनौपचारिक समूहों के संगठनात्मक जाल के अंतर्गत मूल्यों, सिद्धान्तों तथा प्रतीकों की संस्कृति के द्वारा निर्देशित होता है। इसके माध्यम से व्यवसाय कार्य करता है तथा अपनी सेवायें उपलब्ध कराता है।

उपरिलिखित प्रतिरूप (माडल) का प्रयोग करते हुए, 1957 में ग्रीनवुड का विचार था कि समाज कार्य पहले से ही एक व्यवसाय है। यह अन्य प्रकार के विभाजन योग्य होने वाले प्रतिरूप (माडल) के साथ समरूपता के बहुत से बिन्दुओं से युक्त होता है।

अत्याधुनिक वर्षों में, क्या समाज कार्य, समाज कार्य सेवाओं के प्रावधान करने में एकाधिकार रखता है?, को मूल्यांकित करते हुए समाज कार्य की व्यावसायिक स्थिति की जांच की जाती रही है।

वाल्टर ए० फ्रीडलेण्डर एवं राबर्ट जेड आप्टे के अनुसार किसी भी व्यसाय के लिए निम्नलिखित कसौटियाँ होती हैं :

1) बौद्धिक प्रशिक्षण के द्वारा प्राप्त विशेष सक्षमता जोकि कुशलताओं को विकसित करती है तथा इस बात की अपेक्षा करती है कि केवल यन्त्रवत कुशलताओं के रूप में नहीं बल्कि स्वतंत्र एवं उत्तरदायित्वपूर्ण निर्णय के आधार पर इसका उपयोग हो।

2) विद्वतापूर्ण सीखने के आधार पर ज्ञान एवं कुशलताओं के लागू करने के साथ एक नियमित एवं विशेषीकृत शैक्षणिक विद्या विशेष के माध्यम से संचार के लिए सक्षम भिन्न प्रविधियाँ।

3) ऐसे अभ्यासकर्ता जो कि सामान्य बन्धनों की चेतना से युक्त होते हैं तथा सामान्य अभिरुचियों तथा उच्च मानकों की अभिवृद्धि के लिए व्यावसायिक संघ के रूप में संगठित होते हैं।

4) एक व्यावसायिक संघ का होना जोकि जन–अभिरूचि में विशेषीकृत ज्ञान एवं कुशलताओं के उपयोग तथा विशेषीकृत शिक्षा के लिए प्रावधानों तथा आचार संहिता के द्वारा प्रकटन के रूप में अपनी सम्पूर्णता में व्यवसाय के लिए मानकों को विकसित करने से संबद्ध होता है।

5) ऐसे व्यावसायिक व्यक्तियों का होना जोकि समान क्षेत्र में अपने लिए निर्धारित मानकों के प्रकारों के लिए अन्य व्यक्तियों के प्रति वैयक्तिक उत्तारदायित्व तथा जवाबदेही की भावना रखते हों।

एक व्यवसाय के रूप में समाज कार्य कसौटियों की पूर्ति करता है :

- समाज कार्यकर्ताओं को मानव व्यवहार के वैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं सामाजिक संस्थाओं की संरचना एवं संगठन का अध्ययन करना पड़ता है।
- समाज कार्यकर्ताओं को विशेष सामाजिक, आर्थिक एवं संवेगात्मक दशाओं के अंतर्गत व्यक्तियों के साथ कार्य करने के लिए ज्ञान एवं निपुणता को विकसित करना पड़ता है।
- समाज कार्य एक नियमित एवं विशेषीकृत शैक्षणिक विद्या विशेष के माध्यम से संचार के लिए सक्षम अपनी भिन्न प्रविधियों एवं सिद्धान्तों से युक्त है।
- समाज कार्य ऐसे संगठित व्यावसायिक संघों से युक्त है जोकि निष्पत्ति के मानकों तथा आचार संहिता में समावेशित व्यवहार को बनाए रखते हैं।
- समाज कार्य जिन व्यक्तियों की सेवा करता है उनके कल्याण के लिए सक्षम सेवा उपलब्ध कराने के उत्तरदायित्व का वहन करता है।

व्यावसायिक शिक्षा

परोपकार को व्यवसाय के रूप में प्रतिस्थापित करने के प्रयास में प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना करने का प्रयास इस दिशा में पहला कदम था। अनेक समाज कार्यकर्ताओं, विशेष रूप से अन्ना दावेश (1893) एवं मेरी रिचमण्ड (1897) ने कार्मिकों के लिए शिक्षा एवं प्रशिक्षण तथा समाज कार्यकर्ताओं द्वारा प्राप्त संचयित ज्ञान एवं विशेषज्ञता को विकसित करने तथा क्रमबद्ध करने की आवश्यकता के लिए दलील (अपने प्रकाशित लेखों के माध्यम से) दी।

न्यूयार्क चैरिटी आर्गनाइजेशन सोसाइटी के प्रयोजकत्व के अन्तर्गत 1898 में प्रारम्भ किया गया 'द समर स्कूल ऑफ फिलन्थापी" नामक 6 सप्ताह का कार्यक्रम औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा की दिशा में एक दिशा निर्धारित करने वाला प्रयास था। न्यूयार्क के इस नेत त्व वाले प्रयास को देखकर शीघ्रता से शिकागों, बोस्टन, मिशूरी तथा फिलेडेल्फिया नामक अन्य शहरों में परोपकारी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देने के लिए व्यावसासिक विद्यालयों की स्थापना की गई।

अब हम यूरोप में समाज कार्य के आविर्भाव एवं सम्पूर्ण विश्व में इसके प्रसार के परिप्रेक्ष्य में समाज कार्य शिक्षा के अभ्युदय की चर्चा अधिक विस्तृत रूप से करेंगे।

समाज कार्य शिक्षा

समाज कार्य शिक्षा की जड़ों को उन्नीसवीं सदी के अन्त में ब्रिटेन तथा यूरोप के अन्य देशों में उसकी अंतराष्ट्रीय शुरूआत में देखा जा सकता है। इस व्यवसाय का प्रसार यूरोप से संयुक्त राज्य अमरीका, अफरीका, एशिया तथा साउथ अमरीका में हुआ।

यूरोप में आविर्भाव

समाज कार्य शिक्षा लन्दन में विक्टोरियन्स के कार्य से विकसित हुई जिन्होंने परोपकार कार्य के प्रतिरूपों (माडल्स) तथा 1899 अमेस्ट्रडम में समाज कार्य में दो वर्ष का पहला पूर्णकालिक शिक्षण को विकसित करने का प्रयास किया। दि अमेस्ट्रडम इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल वर्क ट्रेनिंग (अमेस्ट्रडम इन्स्टीट्यूट के समाज कार्य प्रशिक्षण) को सिद्धान्त एवं अभ्यास के साथ दो वर्ष का पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम होने का गौरव प्राप्त है।

यद्यपि नीदरलैण्ड में समाज कार्य का प्रथम विद्यालय था, परन्तु 1870 के दशक में समाज कार्य शिक्षा की वास्तविक शुरूआत को अक्टीवाहिल के आवासीय प्रबन्धन तथा 'मित्रतापूर्ण

भेंट करने की क्रिया में स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में पाया जाता है। उसने लन्दन स्थित मलिन बस्ती पड़ोसों में कार्य किया तथा प्रारम्भिक रूप से स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को तथा बाद में पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया। जान रस्किन, जो एक कला आलोचक थे, ने आक्टिवाहिल को उनके कार्य में संप्रेरित किया तथा उनकी क्रियाओं के लिए वित्तीय व्यवस्था की।

बारनेट्स, जिन्होंने पुरूषों के लिए टयोन्वी हाल की स्थापना की, प्रशिक्षण में अभिरूचि नहीं रखते थे। इसलिए, प्रशिक्षण क्रियाओं के लिए पहल महिलाओं की बस्तियों (सेटेलमेण्ट्स) ने किया। इनमें से अग्रणी आक्स्फोर्ड तथा कैम्ब्रिज की महिला स्नातकों द्वारा लन्दन में 1887 में स्थापित वूमेन्स यूनिवर्सिटी सेटेलमेण्ट था। इस समूह द्वारा नयी दिशा दिखाने वाला प्रशिक्षण संगठित पाठ्यक्रमों के रूप में विकसित हुआ तथा अन्तिम रूप से समाज कार्य की व्यावसायिक शिक्षा के रूप में सामने आया।

यूरोप में दूसरी उल्लेखनीय शुरूआत 1899 में एलिस सालोमन द्वारा जर्मनी में युवा महिलाओं के लिए समाज कार्य में एक वर्षीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के प्रारम्भ किए जाने के रूप में थी। सालोमन समाज कार्य के विद्यालयों के अंतर्राष्ट्रीय संघ के संस्थापकों में एक थी तथा वे समाज कार्य शिक्षा तथा महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण के क्षेत्र में विशिष्ट नेत्री थी। 1903 में उनका पाठ्यक्रम एलिस सालोमन स्कूल ऑफ सोशल वर्क बन गया, जो कि कई वर्षों तक जर्मनी में समाज कार्य शिक्षा के लिए एक आदर्श के रूप में स्वीकार किया जाता रहा।

इस प्रकार उन्नीसवीं सदी की समाप्ति में ब्रिटेन में की गई शुरूआत यूरोप एवं उत्तरी अमरीका में उन्नीसवीं सदी के दशक में एवं कुछ बाद में अन्य महाद्वीपों में समाज कार्य के लिए संगठित शिक्षा का विकास हुआ।

उत्तरी अमरीका

संयुक्त राज्य अमरीका में "समर स्कूल ऑफ फिलन्थ्रोपिक वर्क" नामक पाठ्यक्रम ने समाज कार्य के लिए व्यावसायिक शिक्षा की शुरूआत की घोषणा की। यह मेरी रिचमण्ड द्वारा संप्रेरित किया गया था तथा न्यूयार्क की परोपकार संगठन समिति द्वारा चलाया गया। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत व्याख्यान, चर्चाएँ, जाँचे करना, संस्थाओं एवं संगठनों में जाना एवं अनुभव प्राप्त संस्था के निर्देशकों के अधीक्षण के अंतर्गत कार्य करना सम्मिलित था। यह पाठ्यक्रम 1904 में एक वर्षीय कार्यक्रम में न्यूयार्क स्कूल ऑफ फिलन्थ्रोपी के रूप में विकसित हुआ तथा 1911 में इसमें दूसरा वर्ष भी जोड़ दिया गया।

इसी प्रकार, शिकागों में यूनीवर्सिटी ऑफ शिकागों के सहयोग से हल हाउस तथा शिकागों कामन्स ने 1903 में एक वर्षीय पाठ्यक्रम चलाया गया जो बाद में शिकागों इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज बन गया। 1920 में इसका नाम परिवर्तित करके यूनीवर्सिटी ऑफ शिकागों स्कूल ऑफ सोशल सर्विस ऐडमिनिस्ट्रेशन कर दिया गया जो किसी विश्वविद्यालय के अंतर्गत समाज कार्य का पहला स्वायत्तशासी विद्यालय था।

अन्य महाद्वीप

बाद के वर्षों में, यूरोप तथा संयुक्त राज्य अमरीका के दिशा निर्देशक प्रयासों का प्रसार उत्तरी अमरीका, अफरीका, एशिया तथा आस्ट्रेलिया तक हुआ।

क) **दक्षिणी अमरीका**

1925 में दक्षिण अमरीका में दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों–बेल्जिम के डा0 रैने सैन्ड तथा चिली के डा0 अलजान्द्रो डेल रिओ ने पहले विद्यालय को प्रारम्भ किया। दोनों चिकित्सक, सामाजिक चिकित्सा एवं समाज कल्याण मे दिशा निर्देशक थे। बाद में इस विद्यालय का नाम अलजान्द्रो डेल रियो स्कूल ऑफ सोशल वर्क रखा गया जिसमें दो वर्ष का कार्यक्रम चलाया गया। इस पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य से संबधित विषय एवं क्षेत्रीय निर्धारण पर अधिक बल दिया गया। जैसे–जैसे इस विद्यालय की प्रगति हुई, इससे निकले हुए स्नातक पूरे लैटिन अमरीका में समाज कार्य शिक्षा के दिशा निर्देशक बन गए।

ख) **अफ्रीका**

1924 से दक्षिणी अफ्रीका में ब्रिटिश प्रतिरूप (माडल) पर आधारित विद्यालयों की स्थापना की गई। तीन वर्षीय डिप्लोमा वाला पहला संस्थान केप टाउन एवं ट्रान्सवाल यूनिवर्सिटी कालेज के रूप में था। 1932 में यूनीवर्सिटी ऑफ स्टेलेनवोस में पहले स्नातक पाठ्यक्रम की स्थापना की गई।

साउथ अफ्रीका के प्रारम्भिक विद्यालयों में कुछ अपवादों को छोड़कर केवल श्वेत विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जाता था। 1947 में जोहन्सवर्ग में वाई एम सी ए (यंग मेन क्रिश्चियन असोसिएशन) द्वारा स्थापित जॉन एच. हॉफमेयर स्कूल ऑफ सोशल वर्क ऐसा पहला विद्यालय था जिसमें समाज कार्यकर्ता के रूप में श्वेत विद्यार्थियों के अतिरिक्त विद्यार्थी आते थे। इस विद्यालय की स्थापना के लिए लोकोपकारक एवं संसद के सदस्य हाफमेयर तथा धर्म प्रचारक डा0 रैफिलिप्स उत्तरदायी थे। इस विद्यालय के बहुत से स्नातक, जिनमें विनी मण्डेला एक थी, सरकार, राजनीति एवं समाज कल्याण संस्थाओं में सक्रिय हैं।

ग) एशिया

1922 में ऐन्चिंग यूनिवर्सिटी में समाज शास्त्र एवं समाज कार्य विभाग की स्थापना हुई जो एशिया का पहला संस्थान था। यह कला में स्नातक की उपाधि सहित चार वर्ष का पाठ्यक्रम था। फिर भी यह साम्यवादी क्रान्ति को जीवित नहीं रख सका अतः इसे कुछ समय के लिए रोक दिया गया।

इसलिए एशिया में समाज कार्य के प्रथम स्कूल को स्थापित करने का श्रेय 1936 में स्थापित टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज को जाता है जिसे 1964 में विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। शिकागों से आए अमरीकी धर्म प्रचारक क्लीफर्ड मैन्सर्डट ने बम्बई में नागप्पा नेबर हुड हाउस की स्थापना की तथा बाद में सर दोराब जी टाटा ट्रस्ट से उनके संस्थान में अपने स्कूल को लाने के पश्चात् उन्हें संस्थान का पहला निदेशक बनाया गया। उनके सहयोगी डा0 जे. एम. कुमारप्पा, जो कि एक जाने–माने शिक्षाविद तथा कोलम्बिया विश्वविद्यालय से एम. ए. एवं पी. एच. डी. उपाधियों से युक्त थे, उनके पश्चात् संस्थान के पहले भारतीय निदेशक बने। ऐतिहासिक कारणों के फलस्वरूप, अमरीका तथा ब्रिटिश पद्धति से समाज कार्य के भारतीय स्कूलों में एक अन्तर रखा गया है वह है श्रम कल्याण एवं कार्मिक प्रबन्ध का सम्मिलित किया जाना।

घ) आस्ट्रेलिया

प्रारम्भिक रूप से ब्रिटेन एवं अमरीकी प्रतिरूपों (माडल्स) से अधिकांशतः ली गई सामाज कार्य परम्परा को आस्ट्रेलिया में प्रारम्भिक रूप से विकसित किया गया एवं काफी समय बाद वहां पर स्वदेशी सिद्धान्त, अभ्यास एवं प्रकाशन अधिक मात्रा में विकसित हुए। द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले (1929 एवं 1937 के मध्य) विश्वविद्यालय के बाहर पहले समाज कार्य प्रशिक्षण संस्थान जिनकी संख्या पाँच थी, सिडनी, मेलबोर्न तथा एडेलैड शहरों में स्थापित किए गए। ये पहले विद्यालय दो वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के मार्ग से सामान्य समाज कार्य प्रशिक्षण उपलब्ध कराते थें। सामान्य प्रशिक्षण के उपरान्त एक वर्षीय चिकित्सकीय समाज कार्य में विशेषीकरण करना पड़ता था। इन कार्यक्रमों का प्रारम्भिक नेतृत्व चिकित्सीय एवं मनश्चिकित्सीय समाज कार्य में प्रशिक्षित ब्रिटिश महिलाओं द्वारा किया गया।

आस्ट्रेलिया में, समाज कार्य के अभ्यास अधिकांशतः सरकारी तत्वाधान में होता है, तथा गैर सरकारी (स्वैच्छिक) तथा धार्मिक तत्वाधानों में कम मात्रा में सम्पन्न किया जाता है। अनुमानतः तीन चौथाई समाज कार्यकर्ता संघीय एवं राज्य सरकारों की समाज सेवा संस्थाओं में सेवायोजित हैं जबकि बचे हुए एक चौथाई गैर–सरकारी एवं धार्मिक संगठनों में सेवायोजित हैं।

व्यावसायिक संगठनों का उदय

अपने स्नातकों को कार्य उपलब्ध कराने की क्रिया में तेजी लाने की दृष्टि से बहुत से महिला महाविद्यालयों द्वारा न्यूयार्क शहर के अंतर्गत 1911 में इण्टर कालेजिएट ब्यूरों ऑफ अकूपेशन्स नामक व्यावसायिक संगठन की स्थापना की गई। शैक्षणिक समुदाय मे स्वीकृति पाने के लिए प्रयास करने के उद्देश्य से समाज कार्य शिक्षकों द्वारा व्यावसायिक संघों के निर्माण ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। जैसे–जैसे विशेषीकरणयुक्त क्षेत्रों का उदय हुआ, अमेरिकन असोसिएशन ऑफ मेडिकल सोशल वर्कर्स (1918), दि नेशनल असोसिएशन ऑफ मेडिकल सोशल वर्कर्स (1919) तथा दि असोसिएशन फार दि स्टडी ऑफ कम्युनिटी आर्गनाइजेशन (1946) जैसे अन्य संगठनों का गठन हुआ।

नेशनल असोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स (समाज कार्यकर्ताओं का राष्ट्रीय संगठन)

व्यावसायिक एकता की चाह के कारण 1955 में विभिन्न समाज कार्य संगठनों द्वारा आपस में मिलकर नेशनल असोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स (एन ए एस डब्लू) का गठन किया गया। एन ए एस डब्लू की 1,00,000 से ऊपर सदस्यता होने के कारण यह संगठन विश्व में सबसे बडा समाज कार्य संगठन है। एन ए एस डब्लू की पूर्ण सदस्यता काउन्सिल ऑन सोशल वर्क एजुकेशन (सी एस डब्लू ई) द्वारा मान्यता प्राप्त समाज कार्य कार्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधि धारकों को उपलब्ध है। अन्य मानव सेवा अभ्यासकर्ताओं के लिए ए0 ए0 एस0 डब्लू की असोसिएट सदस्यता उपलब्ध है। सदस्यता युक्त संघ के रूप में एन. ए. एस. डब्लू. समाज कार्य अभ्यास कर्ताओं को सहयोग तथा संसाधन उपलब्ध कराता है, व्यावसायिक विकास को बढ़ाता है, अभ्यास के मानकों तथा आचार संहिता को स्थापित करता है एवं समाज कार्य के मानवतावादी आदर्शों तथा मूल्यों में बढोत्तरी करता है।

काउन्सिल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन (समाज कार्य शिक्षा परिषद्)

1952 में काउन्सिल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन (सी एस डब्लू ई) का गठन समाज कार्य शिक्षा के लिए मानक निर्धारित करने वाले संगठन के रूप में किया गया था। यद्यपि प्रारम्भ मे स्नातक उपाधि कार्यक्रमों को परीक्षित कर मान्यता देने का काम इस परिषद् (काउन्सिल) का था, परन्तु 1974 से काउन्सिल ऑन सोशल वर्क एजुकेशन (सी एस डब्लू ई) समाज कार्य शिक्षा के सभी स्तरों, जिसमें उपाधि के लिए तैयारी भी सम्मिलित है, से सम्बद्ध है। सन् 2000 तक काउन्सिल ऑन सोशल वर्क एजुकेशन द्वारा 421 बी एस डब्लू कार्यक्रमों एवं 139 एम एस डब्लू कार्यक्रम का परीक्षण कर मान्यता दी जा चुकी है। सी एस डब्लू

ई का प्रमुख उद्देश्य ,उच्च गुणवत्ता वाली समाज कार्य शिक्षा को आगे बढ़ाना है जिसकी पूर्ति वह कार्यक्रमों की गुणवत्ता की जाँच कर इन्हें मान्यता दे करके शिक्षकों हेतु सभायें आयोजित करके, व्यावसायिक विकास क्रियाओं को सम्पन्न करके, शैक्षणिक कार्यक्रम बनाने पर कार्य दल गठित करके एवं जर्नलों को प्रकाशित करके कर रही है।

आधुनिक प्रवृत्तियाँ और व्यवहार

समाज कार्य व्यवसाय ने अपने का कइ देशों में दृढ़तापूर्वक प्रतिस्थापित कर लिया है तथा प्रशिक्षित समाज कार्यकर्ताओं की मांग सतत रूप से बढ़ रही है। आजकल समाज कार्यकर्ता विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं जैसे कि चिकित्सालय, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामुदायिक केन्द्र, विद्यालय, समाज सेवा संस्थायें, सेवायोजन क्षेत्र, न्यायालय एवं अपराध सुधार। निजी अभ्यास में वे चिकित्सकीय अथवा नैदानिक परीक्षण करने की सेवायें उपलब्ध कराते हैं जो कि बहुत बड़ी संख्या में वैयक्तिक असामान्य व्यवहारों को आच्छादित करती हैं। यद्यपि अधिकांश समाज कार्यकर्ता शहरों एवं छोटे कस्बों में सेवायोजित है, परन्तु कुछ समाज कार्यकर्ता ग्रामीण क्षेत्रों में भी कार्यरत है।

जीवनवृत्ति के अवसर

समाज कार्यकर्ताओं के सेवायोजन में 2010 तक सभी व्यवसायों के लिए औसत वृद्धि की तुलना मे अधिक वृद्धि की आशा की जाती है। वृद्ध व्यक्तियों की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है जिसका परिणाम यह होगा कि समाज कार्यकर्ताओं के लिए वृद्धावस्था के क्षेत्र में कार्य करने के अवसरों की वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, अपराध एवं बाल अपराध के प्रति लगातार बढ़ती हुई चिन्ता एवं मानसिक रूप से बीमारों, मानसिक रूप से मन्दितों, शारीरिक रूप से विकलांगों, एड्स रोगियों एवं संकटग्रस्त व्यक्तियों एवं परिवारों के लिए सेवाओं की आवश्यकता समाज कार्यकर्ताओं की मांग को बढ़ाएगी। समाज कार्यकर्ताओं के लिए जीवन वृत्ति के अन्य विकल्पों में शिक्षण कार्य, अनुसंधान एवं सलाह प्राप्त करना सम्मिलित है। कुछ समाज कार्यकर्ता सरकारी संस्थाओं एवं अनुसंधान संस्थानों की नीति सम्बन्धी स्थितियों का विश्लेषण तथा वकालत कर सरकारी नीतियों के निर्माण में सहायता पहुँचाते हैं।

वैधानिक नियमन (लाइसेन्सिंग)

समाज कार्य अभ्यास को योग्यता वाले व्यक्तियों तक सीमित करने के उद्देश्य से इस व्यवसाय ने अन्य पुराने व्यवसायों का अनुगमन करते हुए लाइसेंस देने वाले विधानों के रास्ते की वकालत की। 1994 तक संयुक्त राज्य अमरीका के समस्त राज्यों तथा प्रदेशों में

समाज कार्य का नियमन किया गया, 47 में लाइसेंस दिए गए तथा अन्य छह में यह व्यवसाय के रूप में पंजीकृत किया गया। 33 राज्यों एवं कोलम्बिया जिले में समाज कार्यकर्ता तृतीय पक्ष प्रतिदान प्राप्त करने हेतु अर्ह हैं। लाइसेंस उपलब्ध कराने को इस आधार पर विरोध किया जाता है कि यह अभिजात वर्गीय है एवं यह अपने आप में पर्याप्त निवारक नहीं है। इस समय की स्थिति में लाइसेन्स देना अच्छा है अथवा खराब, परन्तु इतना सही है कि एक वृत्ति (व्यापार) का व्यवसाय होना अथवा न होना लाइसेंस देने की क्रिया इसका अन्तिम सूचक है।

समाज कार्य अभ्यास का निजीकरण

परम्परागत रूप से, समाज कार्य अभ्यास सरकारी अथवा निजी अलाभकार संस्थाओं द्वारा किया जाता है। फिर भी ऐसे समाज कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ रही है जो या तो निजी शुल्क के साथ सेवा क्षेत्रों में एवं निजी शुल्क के साथ लाभकारी व्यवसाय के रूप में अभ्यास कर रहे हैं। निजी शुल्क सेवा संगठन वे अभ्यास वाले संगठन हैं जो विशेषरूप से व्यावसायों जैसे चिकित्सकों एवं वकीलों द्वारा उपयोग किए जाते हैं जिनमें समाज कार्यकर्ता सामान्य रूप से प्रति घण्टे शुल्क (फीस) के आधार पर सलाह अथवा इलाज की सेवायें उपलब्ध कराते हैं। समाज कार्यकर्ताओं को सेवायोजित करने वाले (अथवा स्वयं के स्वामित्व वाले) निजी लाभकारी व्यापारों का प्रयास हुआ है जिनमें मादक द्रव्य व्यसन एवं शराब सेवन के निदान कार्यक्रम, नर्सिंग, गृह (होम), खाने से उत्पन्न असामान्य व्यवहारों सम्बन्धी क्लीनिक, प्रौढ़ दिवा संरक्षण केन्द्र एवं साथी सेवायें सम्मिलित हैं। श्रम सांख्यकी ब्यूरो ने यह अनुमान लगाया है कि ऐसे समाज कार्यकर्ताओं की संख्या, जो कि स्वयं सेवायोजित है, 1990 एवं 2005 के मध्य 20 प्रतिशत बढ़ जाएगी।

सारांश

हमने देखा कि एक व्यवसाय के रूप में समाज कार्य का अभ्युदय किस प्रकार से चर्च के दान अभिमुखीकरण से सार्वजनिक कल्याण में राज्य की भूमिका से हुआ। ग्रेट ब्रिटेन में जन्में आन्दोलनों एवं संगठनों की पुर्नस्थापना संयुक्त राज्य अमरीका में हुई जबकि इंग्लिश बस्तियाँ नए विश्व में जाकर बसीं। इसके पश्चात अन्य महाद्वीपों में समाज कार्य व्यवसाय का विस्तार हुआ तथा सम्पूर्ण विश्व में अनेक विश्वविद्यालयों के अंतर्गत समाज कार्य के विद्यालयों द्वारा बी एस डब्लू तथा एम एस डब्लू की उपाधियाँ तथा कुछ जगहों पर डिप्लोमा उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

आजकल समाज कार्य एवं समाज कार्य शिक्षा के लिए यह चुनौती है कि वह अपने विश्वासों एवं मूल्यों पर रहते हुए इस परिवर्तनशील समय में लचीले व्यवहार पर अमल करे तथा

सामाजिक न्याय एवं मानव अधिकारों के प्रति बचनबद्ध रहे। समाज कार्य, जिसने कि मानव अधिकारों के प्रति बचनबद्ध रहे। समाज कार्य, जिसने एक सदी की परिवर्तनशील परिस्थितियों में अपने को आगे बढ़ाया है तथा समायोजित किया है, आने वाले वर्षों में भी अपनी अभिवृद्धि एवं परिवर्तन को जारी रखेगा तथा यह इस सहस्राब्दी की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों से आत्मविश्वास के साथ निपटने के लिए सक्षम है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

डुबोस, ब्रेन्दा ऐण्ड कारला क्रोग्सरूड मिले : सोशल वर्क : एन इम्पावरिंग प्रोफेशन : बोस्टनः ब्ले ऐण्ड वेकन, 1932

इन साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क, उन्नीसवाँ संस्करण : वाशिंगटन डी0 सी0, नेशनल एशोसिएशन ऑफ सोशल वर्कर्स, 1955

फरगूशन, एजिलाबेथ ए0 : सोशलवर्क : एन इन्ट्रोडक्शन : द्वितीय संस्करण : न्यूयार्क : जे0 बी0 लिटिनकाट कम्पनी, 1969

फ्रीडलैण्डर, वाल्टर ए. ऐण्ड राबर्ट जेड आप्टे : इन्ट्रोडक्शन टु सोशल वेल्फेयर : पाँचवा संस्करण : नई दिल्ली : प्रेन्टिस हाल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, 1982

कैन्डाल, कैथरीन ए0, "वर्ल्ड–वाइड विगनिंग्स ऑफ सोशल वर्क एजूकेशन", दि इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क अप्रैल 2000, प 0 141–156